तस्यामात्मानुरूपायामात्मजन्मसमुत्सुकः ।

विलम्बितफलैः कालं स निनाय मनोरथैः ।।33।।

अन्वय स आत्मानुरुपायां तस्यां (सुदक्षिणायां) आत्मजन्मसमुत्सुकः (सन्) विलम्बितफलैः मनोरथैः कालं निनाय।

अनुवाद अपनी मनोनुकूल उस सुदक्षिणा में पुत्र के जन्म के लिए उत्सुक राजा ने देर से फल देने वाला (पुत्र प्राप्ति रूप) मनोरथ (अभिलाषा) करते हुए समय व्यतीत किया (राजा ने पुत्र की प्राप्ति की असफल आशा में बहुत समय बिताया अर्थात् दीर्घकाल तक उन्हें पुत्र प्राप्ति नहीं हुई)।

टिप्पणियां

आत्मानुरूपायाम् अनुगतं रूपमस्या इति अनुरुपा, आत्मनः अनुरुपा इति आत्मानुरुपा (षष्ठी तत्पुरुष), तस्याम्, अपने अनुरूप; सुदक्षिणा का विशेषण है। जिसमें दिलीप जैसे राजा की रानी बनने के योग्य गुण थे।

आत्मजन्म श्रुति (वेद) पुत्र के विषय में कहती है **'आत्मा वै पुत्रनामाऽसि'**; अन्यत्र भी पुत्र के विषय में कहा है, **आत्मा वै जायते पुत्रः।** हिन्दुओं का विश्वास है कि पिता स्वयं पुत्र के रूप में अपनी पत्नी से पैदा होता है। भाव यह है कि पुत्र पिता का ही प्रतिबिम्ब होता है। पुत्र में पिता प्रकट होता है। (सन्तान सम् तन् (फैलाना) उस प्रकार से अपने ही अस्तित्व का विस्तार है। एक अर्थ में, इसी प्रकार मनुष्य अपने अमरत्व की

सिद्धि चाहता है। इस समस्त पद का दो प्रकार से विग्रह किया जा सकता है जिससे इस पद के दो अर्थ होते हैं।

(1) आत्मनो जन्म इति आत्मजन्मा (षष्ठी तत्पुरुष)। आत्मजन्मनि (पुत्ररुपेण उत्पत्तौ) समुत्सुकः - पुत्र के रूप में जन्म लेने के लिए उत्सुक (सप्तमी तत्पुरुष)।

(2) आत्मनः जन्म यस्यासौ आत्मजन्मा पुत्र (बहुव्रीहि) अर्थात् जिसका अपने से जन्म है। आत्मजन्मनि (पुत्रे) समुत्सुकः - पुत्र के जन्म के लिए उत्सुक। प्रसित तथा उत्सुक के साथ तृतीया अथवा सप्तमी आती है।

विलम्बितफलैः विलम्बितं फलं येषां ते (बहुव्रीहि समास) तैः। यह समस्त पद 'मनोरथैः' का विशेषण है। वे (मनोरथ) जिनकी सफलता में विलम्ब (देरी) हो रहा है। अर्थात् देर के बाद सफल होने वाली कामनाएँ।

निनाय धातु नि लिट् लकार, अन्य पुरुष, एकवचन; व्यतीत किया, बिताया।